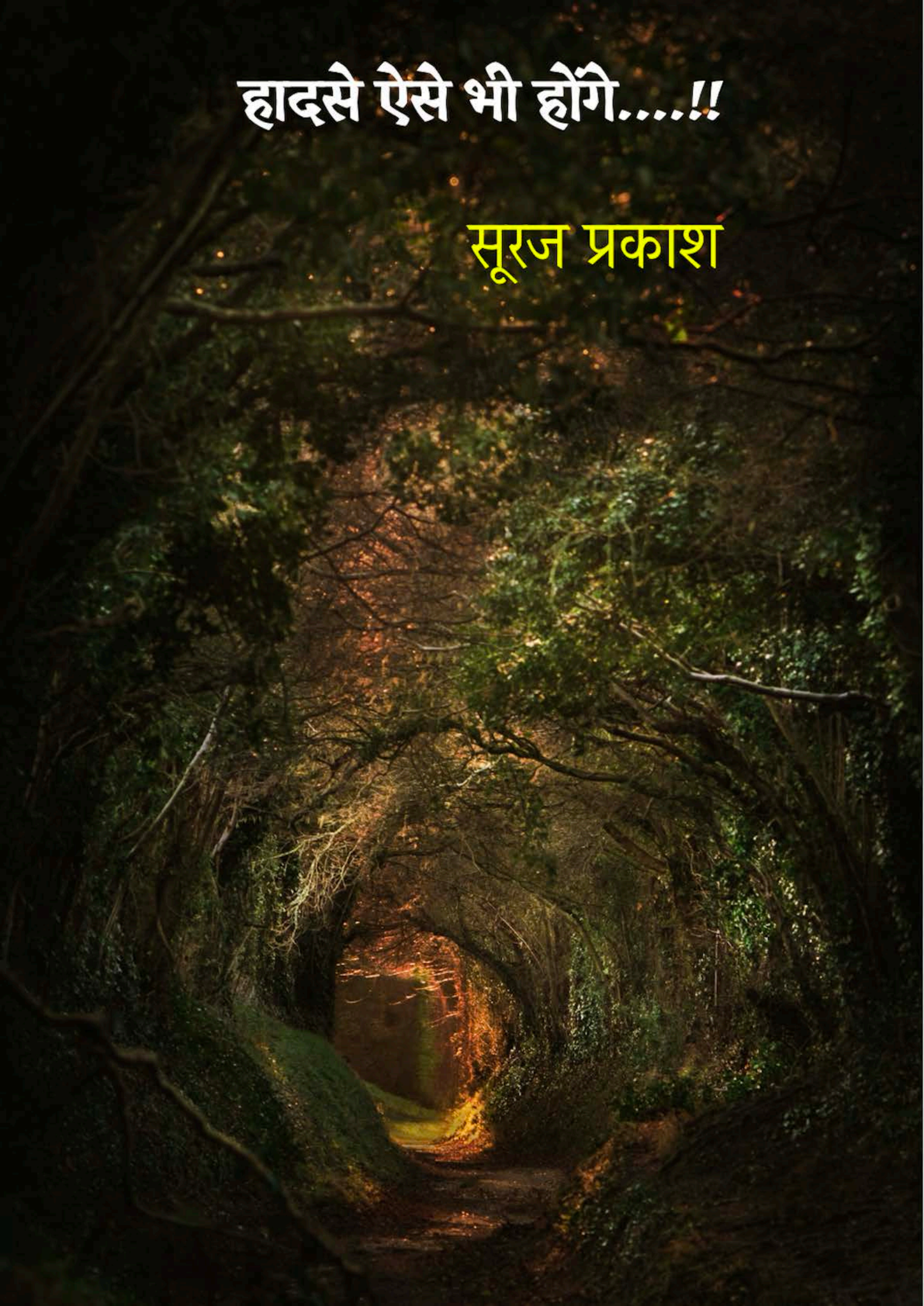

हादसे ऐसे भी होंगे....!!

सूरज प्रकाश

हादसे ऐसे भी होंगे....!!

सूरज प्रकाश

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2015

© सूरज प्रकाश

तभी मेरे साथ वह हादसा हुआ था। 13 अगस्त की रात। उस रात भयंकर बरसात हो रही थी। मैं शूट पूरा करके ट्रेन से जैसलमेर से दिल्ली आ रही थी। बहुत बड़ा प्रोजेक्ट था और पंद्रह दिन के बाद दिल्ली वापिस लौट रही थी। मैं सेकेंड एसी में थी और मेरी टीम के बाकी लोग अपने अपने हिसाब से दूसरे डिब्बों में थे। कम ही लोग थे हमारे डिब्बे में। हमारी 4 सीटों पर हम दो ही पैसेंजर थे। मैं अपना सारा सामान हमेशा अपने साथ ही रखती हूं। दो लैपटॉप, एक कैमरा, अलग अलग लेंसों का सेट, तीन मोबाइल, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, पैन ड्राइव, वॉइस रिकार्डर और 1000 जीबी की एक एक्सटर्नल हार्ड, हैड फोन, ईयर फोन, ड्राइविंग लाइलेंस, आधार कार्ड, पैन कार्ड तथा कुछ और छोटे मोटे सामान। सबसे कीमती 1000 जीबी की एक्सटर्नल हार्ड डिस्क जिस पर मेरी अब तक की शूट की गयी सारी रॉ और फाइनल फिल्में सेव की हुई थीं। पूरे कैरियर में अलग अलग एजेंसियों के लिए बनायी हुई। कुछ फाइनल होने के करीब थीं और लौटते ही तैयार करके सौंपनी थीं। बहुत मेहनत और लगन से बनायी हुई कुछ अपनी फिल्में थीं मेरी जो मुझे बेहद प्रिय थीं और सही वक्त पर सही जगह सही कीमत पर बेची जानी थीं। कुल 100 से भी ज्यादा। इनमें वो रॉ फिल्म भी थी जो हम जैसलमेर से शूट करके ला रहे थे और ये मेरी अब तक की सबसे महंगी, और प्रेस्टीजियस फिल्म थी। 40 लाख की। मेरा ये सारा खज़ाना आधी रात में चलती ट्रेन में किसी ने चुरा लिया था। मैं बरबाद हो चुकी थी।

मेरा ये सारा कीमती सामान दो बैगों में था। इनके अलावा एक बड़ा पर्स और कपड़ों के लिए एक सूटकेस। सारी चीजें एक ही जगह रखने की अपनी जिद या खराब आदत के

चलते ही ये हादसा हुआ था। ज़रूर कोई मेरे सामान पर निगाह रखे हुए होगा। ट्रेन में रात के वक्त बरसात का फायदा उठाते हुए कोई हाथ साफ कर गया। मैं एकदम से सड़क पर आने की हालत में आ गयी थी। सिर्फ मैले कपड़ों का सूटकेस ही छोड़ दिया गया था। मेरा पर्स और कीमती सामान के दोनों बैग जा चुके थे। पर्स तो बिल्कुल मेरे सिर के पास से ही उठा लिया गया था। पता नहीं रात को किस वक्त और किस स्टेशन पर ये हादसा हुआ होगा लेकिन मुझे सुबह उठने पर ही पता चला था। मैं खाली हाथ रह गयी थी। चाय लेने तक के पैसे नहीं बचे थे मेरे पास। मैंने शोर मचाया था, रोयी थी, चिल्लायी थी, लेकिन न तो मुझे कोई ढंग की सलाह मिल पायी थी और न ही कोई मदद मिल पायी थी। एटेंडेंट कुछ बता नहीं पाया था और टीटी का कुछ पता नहीं था। बेशक दो एक सहयात्री ज़रूर मेरी मदद के लिए आगे आये थे। मुझे नहीं पता था कि चोरी की रिपोर्ट कहां करनी है। मुझे ये भी खबर नहीं थी कि मेरे साथी किस किस डिब्बे में हैं। मैं बदहवास थी। किसी तरह एसी थ्री टीयर में जा कर अपने सहायक विपिन को खोजा था और उसके जरिये पूरी टीम तक खबर पहुंची थी। मेरे सारे सामान के जाने का मतलब मेरा और मेरी पूरी टीम का बेरोज़गार हो जाना था। सबसे पहले तो चोरी की रिपोर्ट लिखवानी थी। सहयात्रियों ने यही सलाह दी कि चोरी वाले या उसके बाद के सबसे नजदीक के स्टेशन पर ही रिपोर्ट लिखाना ठीक रहता है। यही सोच कर मैं और विपिन अगले स्टेशन पर उतर गये थे। ये अलवर जंक्शन था और यहां ट्रेन सिर्फ दो ही मिनट के लिए रुकती थी। तय था कि न तो दो मिनट में रिपोर्ट लिखी जा सकती थी और न ही किसी मदद की उम्मीद की जा सकती थी।

रेलवे पुलिस में रिपोर्ट लिखवाना इतना आसान नहीं था। बैग के साथ ही मेरा जर्नलिस्ट कार्ड भी जा चुका था और मुझे अपने आपको जर्नलिस्ट सिद्ध करने में ही अच्छी खासी तकलीफ़ हुई। संडे की सुबह होने के कारण वहां कोई जिम्मेवार आदमी नहीं था। एक सिपाहीनुमा आदमी बैठा था जिसे न हिंदी लिखनी आती थी और न ही कोई और भाषा ही। जिस आदमी को रिपोर्ट शब्द सही न लिखना आता हो उससे ये उम्मीद ही कैसे की जा सकती थी कि वह मेरे साथ न्याय करता या चोर को पकड़ने में मेरी मदद करता। उसने रिर्पोट लिखा था। साफ साफ लग रहा था उसे रिपोर्ट क्या, कुछ भी लिखना नहीं आता था। दो लाइनें लिखने में ही उसके पसीने छूटने लगे थे।

मैं गुस्से में तो थी ही, अड़ गयी - जब तक कोई जिम्मेवार पुलिसवाला वहां नहीं आयेगा, हम रिपोर्ट नहीं लिखवायेंगे और बिना रिपोर्ट लिखवाये जायेंगे नहीं।

तब वहां अच्छी खासी भीड़ जमा हो गयी थी। स्टेशन मास्टर को किसी ने खबर कर दी थी और वे भी वहीं चले आये थे। हमारा गुस्सा देख कर उन्होंने हमें शांत करने की कोशिश की और अलवर में मौजूद सबसे सीनियर रेलवे पुलिस वाले को बुलवा लिया गया था। पता नहीं किस रैंक का रहा होगा। लेकिन स्मार्ट और बातचीत में समझदार और कड़क लगा। उसने आते ही नयी समस्या खड़ी कर दी। बेशक ये पता चलने पर कि मैं पत्रकार हूं वह थोड़ा नरम हुआ। हमारे लिए चाय मंगायी। ध्यान से पूरी बात सुनी। पूछा क्या क्या सामान गया है। मैंने अपनी याददाश्त का सहारा लेते हुए चोरी गये सामान की पूरी सूची लिख कर दे दी। ब्रैंड नेम्स के साथ - जितना बताया जा सकता था।

- कुल कितने का सामान गया होगा?

- सामान की कीमत तो तीन लाख तक की होगी लेकिन लैपटॉप और हार्ड डिस्क में जो फिल्में थीं, मेरी इंटेलेक्चुअल प्रोपर्टी की कीमत भी लगायें तो चार से पांच करोड़।

- ये इंटेलेक्चुअल प्रोपर्टी क्या होती है? वह हैरानी से बोला था।

ऐसे तनाव पूर्ण पलों में भी मेरे चेहरे पर हल्की सी मुसकान आ गयी थी - आप नहीं समझ पायेंगे। एफआइआर लिखवाते समय इस मुद्दे को नहीं समझाया जा सकता। वैसे भी इस रिपोर्ट में उसका जिक्र करने का कोई मतलब नहीं। मैंने बात खत्म करनी चाही थी।

- लेकिन आप तो बता रही थीं कि आप पत्रकार हैं। इतना तो मैं भी जानता हूं कि ये सारा सामान पत्रकार तो लेकर नहीं चलते। उसने अपनी समझ दिखानी चाही थी।
- आप सही कह रहे हैं। मैं फिल्में बनाती हूं। डाक्यूमेंटरी फिल्में। एक फ्रेंच कंपनी के लिए। ये काम भी मीडिया में आता है।
- कैश कितना था?
- बीस हजार के करीब।
- कार्ड कितने थे?
- दो क्रेडिट कार्ड और एक डेबिट कार्ड। ड्राइविंग लाइसेंस, आधार कार्ड, पैन कार्ड, हेल्थ इंशोरेंस कार्ड वगैरह।
- ब्लाक करवा दिये हैं?